तकनीकी प्रकाशन संख्या– BAU/KVK/2026-27-03

पशुओं में होने वाले प्रमुख रोग एवं उपचार

प्रकाशक सह संपादक

डॉ. अनिता कुमारी

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

लेखक

डॉ० मो० ज्याउल होदा

डॉ० अंजली कुमारी सिन्हा

डॉ० शगुफ्ता परवीन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय,

सबौर - 813210

ईमेल - bhagalpurkvk@gmail.com

नवीनतम कृषि फिल्मों को देखने के लिए हमारा यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें।

/bausabour

किसान हेल्प लाइन 1800 3456 455 (टोल फ्री)

बी.ए.यू. एग्रो डॉक्टर 700452883

आपका अपना रेडियो स्टेशन

green 90.8FM

अब मोबाइल पर उपलब्ध

GET IT ON Google Play

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

पशु रोग और उपचार तालिका

रोग	रोग का कारण	प्रमुख लक्षण	प्राथमिक उपचार एवं रोकथाम
खुरपका-मुंहपका (FMD)	विषाणु	मुंह और खुरों (पैरों) में छाले व घाव होना, लार टपकना, बुखार.	पैरों और मुंह को $KMnO_4$/Boric powder या फिटकरी के पानी से धोएं। FMD का टीका साल में 2 बार समय पर लगवाएं. डॉक्टर की सलाह से उपचार करवाएं
गलघोंटू	जीवाणु	गले में भारी सूजन, सांस लेने में अत्यधिक तकलीफ (घुर-घुर की आवाज), तेज बुखार.	वर्षा ऋतु से पहले HS का टीका अनिवार्य लगवाएं. लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर की सलाह से उपचार करवाएं
लंगड़ा बुखार / ब्लैक क्वार्टर	जीवाणु	पिछले पुट्ठे (पैर) में गर्म सूजन, दबाने पर चर-चराहट की आवाज़ आना, लंगड़ापन.	सूजन वाले स्थान पर चीरा लगाकर साफ करें, डॉक्टर की सलाह से उपचार करवाएं और समय पर टीका दें.
थनैला रोग	जीवाणु (Bacteria)	थनों में सूजन, अयन का कड़ा होना, दूध में खून, मवाद या पानी जैसा पतलापन आना.	प्रभावित थन को पूरा खाली करें। एंटीबायोटिक इंट्रामैमरी ट्यूब चढ़ाएं। देसी इलाज में हल्दी, एलोवेरा और चूने का लेप लगाएं.
मिल्क फीवर (दुग्ध ज्वर)	कैल्शियम की कमी	ब्याने (बच्चा देने) के तुरंत बाद पशु का ठंडा पड़ जाना, बैठ जाना और गर्दन मोड़कर पेट पर रखना.	डॉक्टर की सलाह से नस (vein) द्वारा **कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट** (Calcium Borogluconate) का **इंजेक्शन** दें.
अफरा (Bloat / Tympany)	खान-पान (दूषित या अधिक हरा चारा)	पेट का बाईं ओर से अत्यधिक फूल जाना, पशु का बेचैन होना, सांस लेने में दिक्कत.	पशु को तारपीन का तेल (मीठे तेल या अलसी के तेल के साथ) पिलाएं, या पेट से गैस निकालने के लिए ट्रोकार कैनुला का उपयोग करें और तुरंत डॉक्टर की सलाह से उपचार करवाएं
परजीवी रोग	कीड़े, जूँ, किलनी	पशु का कमजोर होना, चमड़ी खुरदरी होना, दस्त और दूध उत्पादन में कमी.	• डॉक्टर की सलाह से नियमित अंतराल पर कृमिनाशक दवा (Deworming) (जैसे एल्बेंडाजोल, आइवरमेक्टिन) दें. बाहय परजीवी की **Amitraz** (अमित्राज - 12.5%): यह सबसे प्रभावी लिक्विड है। इसकी 2 मिली मात्रा को 1 लीटर पानी में मिलाकर पशु के शरीर पर (आंख, मुंह और थन बचाकर) लगाया जाता है। लगाने के बाद पशु को 2-3 घंटे तक चाटने न दें।

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

गाय और भैंस के प्रजनन रोगों का उपचार (Reproductive Diseases & Treatment)

बीमारी का नाम (Disease Name)	मुख्य लक्षण (Symptoms)	मुख्य कारण (Main Causes)	उपचार और प्रबंधन (Treatment & Management)
एनेस्ट्रस (Anestrous) - पशु का ताव/गर्मी में न आना	(I) पोषक तत्वों और मिनरल मिक्चरकी कमी। (ii) पेट में कीड़े होना। (iii) हार्मोनल असंतुलन।	(I) ब्याने के लंबे समय बाद भी पशु का गर्मी के लक्षण न दिखाना। (iii)अंडाशय (Ovaries) का निष्क्रिय होना।	(i) कृमिनाशक: सबसे पहले पेट के कीड़ों की दवा (Deworming) दें। (ii) मिनरल मिक्चर: रोजाना 50-100 ग्राम अच्छी गुणवत्ता का मिनरल मिक्चर दें। (iii) हार्मोन थेरेपी: डॉक्टर की सलाह से GnRH या प्रोजेस्टेरोन (जैसे *Prane*) हार्मोन का कोर्स करवाएं। (iv) देसी उपाय: जायफल या अंकुरित गेहूं खिलाना मददगार होता है।
रिपीट ब्रीडिंग (Repeat Breeding) - बार-बार फिरना	(I) गर्भाशय में संक्रमण (Metritis)। (ii) गलत समय पर ए.आई. करना। (iii) अंडे का समय पर न निकलना (Delayed Ovulation)।	पशु का बार-बार ताव में आना लेकिन ए.आई. (A.I.) या सांड से मिलाने पर भी गाभिन न ठहरना।	(i) एंटीबायोटिक इंट्रा-यूटेराइन: डॉक्टर से गर्भाशय (बच्चादानी) की सफाई करवाकर 3-5 दिन तक दवा डलवाएं। (ii) हार्मोन इंजेक्शन: ए.आई. (A.I.) कराने के तुरंत बाद या ठीक पहले Receptal (GnRH) या LH का इंजेक्शन लगवाएं। सही समय पर गर्भाधान: सुबह ताव में आने वाले पशु को शाम को और शाम को आने वाले को अगली सुबह ए.आई. करें।
जेर का रुकना (Retention of Placenta - ROP)	(I) कैल्शियम या विटामिन E और सेलेनियम की कमी। (ii) कठिन प्रसव (Dystocia) या समय से पहले बच्चा देना।	ब्याने के 8 से 12 घंटे बाद भी जेर (Placenta) का अपने आप बाहर न गिरना।	(i) हाथ से न खिंचवाएं: जेर को जबरदस्ती हाथ से खींचकर कभी न निकलवाएं, इससे संक्रमण फैल सकता है। 9ii) लिक्विड दवाएं: ब्याने के तुरंत बाद *Exapar*, *Uterotone* या *Involon* जैसी गर्भाशय साफ करने वाली दवा पिलाएं। * इंजेक्शन: डॉक्टर से एंटीबायोटिक, दर्द निवारक और कैल्शियम (जैसे *Mifax*) का इंजेक्शन लगवाएं।
गर्भाशय का बाहर आना (Prolapse of Uterus) - पीछा दिखाना/फूल आना	(I) शरीर मेंकैल्शियम की कमी। (ii) पशु का अत्यधिक जोर लगाना या सीलन/ढलान वाली जगह पर बैठना।	ब्याने के ठीक पहले या बाद में गर्भाशय (बच्चादानी) या योनि का हिस्साशरीर से बाहर लटक जाना।	(i) सफाई: बाहर निकले भाग को तुरंत ठंडे पानी और लाल दवा (Potassium Permanganate) के घोल से धोकर साफ करें। (ii) वापस डालना: पशु चिकित्सक से इसे सुरक्षित तरीके से अंदर करवाकर रस्सी का छिका (Truss) बंधवाएं या टांके लगवाएं। (iii)इंजेक्शन: कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट की बोतल चढ़वाएं और दर्द व सूजन कम करने के इंजेक्शन दें।

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

बकरी के प्रमुख रोग और उपचार तालिका (Goat Diseases and Treatment Table)

रोग	रोग का कारण	मुख्य लक्षण	प्राथमिक उपचार एवं रोकथाम
पी.पी.आर. गोट प्लेग	विषाणु	तेज बुखार, मुंह में छाले, नाक-आंख से पानी बहना, बदबूदार दस्त, सांस में तकलीफ.	इसका कोई पक्का इलाज नहीं है। डॉक्टर से एंटीबायोटिक और लिवर टॉनिक दिलवाएं। बचाव के 3 साल में एक बार PPR का टीका लगवाएं.
ई.टी. फिड़किया	जीवाणु	पेट में तेज दर्द, बकरी का अचानक चक्कर खाकर गिरना, पीछे की तरफ गर्दन मोड़ना और मौत.	बीमारी आने पर इलाज का समय नहीं मिलता। हरी घास चराने से पहले बचाव के 1 साल में एक बार ET का टीका (वर्षा ऋतु से पहले) अवश्य लगवाएं.
चेचक	विषाणु	शरीर पर, विशेषकर थन, मुंह और पूंछ के पास दाने या चेचक के छाले होना, तेज बुखार.	दानों पर पोटेशियम परमैंगनेट ($KMnO_4$) या नीम का पानी लगाएं। हर सालगोट पॉक्स का टीका लगवाएं.
खुरपका-मुंहपका	विषाणु	मुंह और खुरों के बीच छाले व घाव होना, लंगड़ाकर चलना, लार टपकना.	पैरों और मुंह को लाल दवा $KMnO_4$ या फिटकरी के पानी से धोएं। FMD का टीका साल में 2 बार समय पर लगवाएं.
निमोनिया	ठंड या बैक्टीरिया	खांसी, सांस लेते समय पसली चलना, नाक से गाढ़ा बलगम आना, सुस्ती.	बकरी को ठंड और सीलन से बचाएं। डॉक्टर की सलाह से एंटीबायोटिक इंजेक्शन लगवाएं.
परजीवी / पेट के कीड़े	आंतरिक परजीवी	बकरी का वजन न बढ़ना, पेट लटक जाना, जबड़े के नीचे सूजन (Bottle Jaw), दस्त.	हर 3 से 4 महीने में कृमिनाशक दवा (Deworming) जैसे Fenbendazole या Albendazole बदल-बदल कर दें.
दगड़ी / थनैला	जीवाणु	अयन (थन) का सूज जाना, गर्म होना, दूध में थक्के या खून आना.	थन को पूरा खाली करें। डॉक्टर से एंटीबायोटिक ट्यूब थन में चढ़वाएं और थनों की साफ-सफाई रखें.

बकरी पालकों के लिए जरूरी बातें:

टीकाकरण (Vaccination): बकरियों को बीमारियों से बचाने का सबसे सस्ता और सुरक्षित तरीका समय पर टीकाकरण है।

क्वारंटाइन: बाजार से लाई गई नई बकरी को कम से कम 14 दिनों तक अपने फार्म की पुरानी बकरियों से अलग रखें।

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.